तिलहनों और दलहनों से सम्बंधित क्षेत्रफल और उत्पादन में हुई वर्षवार बढ़ोतरी निम्न प्रकार है जिसमें अधिक उपज प्रजाति कार्यक्रम का प्रभाव भी शामिल है :—

तिलहनों और दलहनों के अन्तर्गत क्षेत्रफल एवं उत्पादन :

वर्ष	तिलहन		दलहन	
	क्षेत्रफल (लाख हैक्टर)	उत्पादन (लाख टन)	क्षेत्रफल (लाख हक्टर)	उत्पादन (लाख टन)
1980–81 . . .	176.0	93.7	224.6	106.3
1981–82 . . .	189.1	120.8	238.4	115.1
1982–83 . . .	177.6	100.0	228.3	118.6
1983–84 . . .	186.9	126.9	235.4	128.9
1984–85 . . .	198.5	131.0	227.3	121.9

इस्पात-उत्पादन में आत्मनिर्भरता

392. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव :**

डा. बापू कालदाते :

क्या **इस्पात और खान** मंत्री 14 मार्च, 1986 को राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न 1935 के दिये गये उत्तर को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) इस्पात के उत्पादन में आत्म-निर्भरता प्राप्त करने की नीति की जो जांच की जा रही है, उसका क्या परिणाम निकला है ;

(ख) इस्पात के उत्पादन की किस्म को सुधारने में कितनी सफलता मिली है ;

(ग) सातवीं पंचवर्षीय योजना में बोकारो, दुर्गापुर और राउरकेला इस्पात संयंत्रों को कितनी-कितनी धनराशि आवंटित की गई है तथा इस संबंध में कितनी सफलता मिली है ; और

(घ) क्या जापान द्वारा इस्पात उत्पादन के सम्बन्ध में अपनाई गई प्रौद्योगिकी को अपने देश में भी अपनाया जा सकता है ?

इस्पात और खान मंत्री (श्री कृष्ण चन्द पंत): (क) "सेल" के कारखाने वर्ष 1984-85 से विक्रय इस्पात की क्षमता के उपयोग को 73 प्रतिशत से बढ़ाकर वर्ष 1985-86 में 79 प्रतिशत तक करने में सक्षम हो गये हैं। वर्ष 1986-87 के दौरान विक्रेय इस्पात की क्षमता के उपयोग को बढ़ाकर 90 प्रतिशत तक करने की योजना है । आत्म-निर्भरता प्राप्त करने तथा आयात को कम करने के उद्देश्य से इस्पात के देशीय उत्पादन में वृद्धि करने के लिए एक रणनीति अपनायी जाएगी ।

(ख) क्वालिटी में सुधार करना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है । 14 मार्च, 1986 के अतारांकित प्रश्न सं. 1935 के उत्तर में उल्लिखित इस्पात की क्वालिटी में सुधार लाने के लिये सुझाये गये विभिन्न उपाय कार्यान्वयन के विभिन्न चरणों में है । वर्ष 1985-86 में "सेल" ने अपने इस्पात की किस्म में और सुधार किया है ।

(ग) सातवीं योजना के दौरान बोकारो, दुर्गापुर तथा राउरकेला के इस्पात कारखानों को आवंटित पूंजीगत व्यय का ब्यौरा इस प्रकार है : —

(करोड़ रुपये)

	सातवीं योजना के लिए आवंटन	वर्ष 1986–87 के लिए बजट अनुमान	वर्ष 1985–86 के लिए खर्च (आंकड़े अस्थायी हैं)
बोकारो . . .	774.01	121.56	145.16
दुर्गापुर . . .	688.03	79.00	43.03
राउरकेला . . .	674.20	74.50	87.12

बोकारो, दुर्गापुर तथा राउरकेला में हुई संयंत्र-वार प्रगति का ब्यौरा इस प्रकार है :-

(1) **बोकारो इस्पात कारखाना** : 40 लाख टन इस्पात पिण्ड/द्रव इस्पात के उत्पादन के लिए मुख्य सुविधाएं पूरी तरह से स्थापित कर ली गयी हैं । जून, 1985 में अन्तिम पांचवीं धमन भट्टी चालू कर दी गयी थी 1 दिसम्बर, 1985 में मेघाटाबुरू में लौह अयस्क की गृहीत खान को चालू कर दिया गया था। इसके अलावा दिसम्बर, 1985 में 60-60 मेगावाट के तीन गृहीत विद्युत संयंत्रों की प्रथम इकाई को भी चालू कर दिया गया था ।

(2) **दुर्गापुर इस्पात कारखाना** : 60-60 मेगावाट क्षमता के दो गृहीत विद्युत संयंत्रों का काम प्रगति पर है तथा इनकी प्रथम इकाई के जून, 1986 में चालू हो जाने की सम्भावना है । इस्पात कारखाने के आधुनिकीकरण से सम्बन्धित समर्थकारी कार्य को भी हाथ में लिया गया है ।

(3) **राउरकेला इस्पात कारखाना** : सिलिकान इस्पात परियोजना की स्थापना सम्बन्धी कार्य पूरा हो गया है । कोल्ड रोल्ड नान-ओरिएण्टेड स्टीम का कार्य शुरू कर दिया गया है तथा बिजली की सप्लाई मिलने पर कोल्ड रोल्ड ग्रेन ओरिएण्टेड स्टीम के परीक्षण का कार्य हाथ में लिया जाएगा । गृहीत विद्युत संयंत्र (2-60 मेगावाट) के कार्य में काफी प्रगति हुई है तथा इसकी प्रथम इकाई के सितम्बर, 1986 तक चालू हो जाने की संभावना है ।

(घ) "सेल" ने राउरकेला, दुर्गापुर तथा इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कम्पनी के प्रौद्योगिकीय उन्नयन तथा आधुनिकीकरण के लिए जापान की एन.के.के. के साथ एक सहयोग समझौता किया है । एन.के.के. की विशिष्ट सिफारिशों सहित सामान्य जांच रिपोर्ट के मई-जून, 1986 तक प्राप्त हो जाने की सम्भावना है। आशा है इस सहयोग समझौते के माध्यम से "सेल" को अपने इस्पात कारखानों में जापान की लोहा तथा इस्पात बनाने की प्रौद्योगिकियों को क्रमबद्ध रूप में अपनाना संभव हो सकेगा ।

कृषि मंत्रालय में राजभाषा का प्रयोग

393. **श्री जगदम्बी प्रसाद यादव** : क्या कृषि मंत्री 14 मार्च, 1986 को राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न 1947 के दिये गये उत्तर को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा जारी किये गये 1985-86 के वर्ष के केन्द्र की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन संबंधी वार्षिक कार्यक्रम के पृष्ठ 10 पर इस आशय के दिये गये मद (च) की ओर दिलाया गया है कि विभिन्न मंत्रालयों/विभागों के हिन्दी अनुभागों को छोड़कर वहां के कम से कम एक अनुभाग में शत प्रतिशत कार्य हिन्दी में किया जाना चाहिये ताकि अन्य अनुभाग इससे प्रेरणा ले सकें और यदि हां, तो इसे लागू न किये जाने के क्या कारण है ; और

(ख) क्या सरकार इस मद को लागू करने का विचार रखती है और यदि हां, तो कब तक और किस प्रकार ?

कृषि और सहकारिता विभाग में राज्य मंत्री (श्री योगेन्द्र मकवाणा) : (क) तथा (ख) राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 1985-86 के लिए जारी किया गया वार्षिक कार्यक्रम सभी सम्बन्धितों को आवश्यक कारवाई करने के लिए भेजा गया है । हिन्दी अनुभागों को छोड़कर, जहां सारा काम हिन्दी में किया जा रहा है, मंत्रालय ने ऐसे कुछ विषयों को चुना है जिनके संबंध में कार्य केवल हिन्दी में किया जाना है । ऐसे अनुभागों का पता लगाने के भी प्रयास किये जा रहे हैं, जिनमें समूचा कार्य हिन्दी में किया जा सके।

Hazira Fertilizer Plant

394. DR. BAPU KALDATE: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether the Hazira Fertilizer Plant has run into trouble due to nonavailability of rakes;